eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 09, September 2025

बोधात्मक पठन, भाषा प्रवीणता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बंध पर विद्यार्थीयों की धारणाए: एक गुणात्मक अध्ययन

आकांक्षा सिंह[1] एवं डॉ0 राजेंद्र बहादुर सिंह[2]
[1]शोधार्थी, वी0एस0एस0डी0 कालेज कानपुर; छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय कानपुर
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर एम0एड0 विभाग, वी0एस0एस0डी0 कालेज कानपुर, (छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय कानपुर)

Received: 20 September 2025 Accepted & Reviewed: 25 September 2025, Published: 30 September 2025

Abstract

अधिगम के क्षेत्र में बोधात्मक पठन जिसे हम पठन बोध भी कहते है एंव भाषा प्रवीणता दो ऐसे महत्वपूर्ण घटक हैं जो विद्यार्थीयों की शैक्षिक उपलब्धि को बहुत प्रभावित करते हैं। इस क्षेत्र में पूर्व में किये गये अध्ययन से इनकी महत्ता एंव इनका शिक्षा के क्षेत्र में क्या प्रभाव पड़ता है इस विषय में भी पता चलता है। इन दोनो का विद्यार्थीयों के जीवन में बहुत महत्व है। यह उनके अधिगम क्षेत्र को मजबूत बनाते एंव उनके मस्तिष्क में ज्ञानवर्धक नये विचार उत्पन्न करते हैं। इससे विद्यार्थीयों के ज्ञान में वृद्धि होती है एंव बोध का स्तर उच्च होता है जिससे उन्हें अपनें अध्ययन कार्य में मदद मिलती है। यह अध्ययन विद्यार्थीयों के बोधात्मक पठन भाषा प्रवीणता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बंध पर उनकी क्या धारणाए: है इसकी व्याख्या करता है कि भाषा केवल संचार का माध्यम नही है बल्कि यह सोचने समझने और सीखनें की प्रक्रिया का आधार भी है। इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थीयों के दृष्टिकोण से यह जनना है कि उनका बोधात्मक पठन एंव भाषा प्रवीणता किस प्रकार उनके शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करते है। नमूनें के तौर पर इस अध्ययन में कानपुर नगर के कक्षा–6 से कक्षा– 10 तक के 30 विद्यार्थीयों का चयन किया गया जिन पर स्वः निर्मित उपकरण से परीक्षण किया गया है। इस अध्ययन में साक्षात्कार फोकस समूह चर्चा एंव विषयगत विश्लेषण के माध्यम से प्रदत का संकलन किया गया है। इसमें विद्यार्थीयों के साथ–साथ 10 शिक्षकों एंव 10 अभिभावकों के विचार भी एकत्र किये गये है जिससे विद्यार्थीयों पर इन घटकों के प्रभाव का पता लगाया जा सके।

मुख्य शब्दः– बोधात्मक पठन, भाषा प्रवीणता, शैक्षिक उपलब्धि, धारणाएँ, गुणात्मक अध्ययन, विद्यार्थी

Introduction

इस अध्ययन में शिक्षा के क्षेत्र में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखनें वाले घटकों के विषय में अध्ययन किया गया है। ये घटक बोधात्मक पठन भाषा प्रवीणता और शैक्षिक उपलब्धि है। इस अध्ययन में यह देखा गया है कि विद्यार्थीयों की इन घटकों को लेकर क्या धारणाएँ है और यह किस प्रकार एक दूसरे के मध्य सम्बंध स्थापित करते हैं। बोधात्मक पठन एंव भाषा प्रवीणता का विद्यार्थीयों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है इस सम्बंध उनके विचारों का अध्ययन किया गया है। सर्वप्रथम हम यह जाननें का प्रयास करते हैं कि बोधात्मक पठन, भाषा प्रवीणता, शैक्षिक उपलब्धि, विद्यार्थीयों की धारणाएँ एक गुणात्मक अध्ययन क्या होता है।

1.1 बोधात्मक पठन– बोधात्मक पठन से तात्पर्य यह है कि पाठ को विद्यार्थी पढ़ कर उसका अर्थ ग्रहण कर लेते हैं। इससे उन्हें अपने अध्ययन कार्य को सरल बनाने में सहायता मिलती है। बोधात्मक पठन एक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 09, September 2025

लक्ष्य उन्मुख प्रक्रिया है। पाठक पाठय सूचना के अनरूप संदर्भों का निमार्ण करते हैं इससे उन्हें यह समझने में मदद मिलती है कि पाठय सामग्री को पढ़ने के माध्यम से वे वास्तव में क्या समझ पाते हैं। बोधात्मक पठन कौशल न केवल शैक्षिक उपलब्धि और व्यवसायिक सफलता के लिये बल्कि उत्पादक सामाजिक और नागरिक जीवन के लिये महत्वपूर्ण है। यह कौशल स्वतंत्र रूप से सीखनेए विभिन्न जानकारी अवशोषित करनेंए पढ़नें का आनंद लेने और साहित्य का और अधिक गहराई से अनुभव करने की क्षमता का निमार्ण करते हैं। जिन बच्चों को कम उम्र में समझ विकसित होती हैए उन्हें व्यापक पाठ्य सामग्रीए ज्ञान और शैक्षिक अवसरों तक पहुच प्राप्त होती है। जिससे प्रांरभिक पठन बोध निर्देश विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। पठन निर्देश का उद्वेश्य युवा पाठकों को उपकरण प्रदान करना है जिनकी उन्हें प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक सभी विषयों में शिक्षण सामग्री को समझने के लिये आवश्यकता होती है।

1.2 भाषा प्रवीणता – भाषा प्रवीणता को सम्प्रेषणीय दक्षता के रूप में भी देखा जाता हैए जिसे तीन घटकों के संदर्भ में परिभाषित किया जा सकता हैः भाषा का सटीक प्रयोग उचित और लचीले ढ़ग से प्रयोग करनें की क्षमता। इसमें शब्दों और संरचनओं का सटीक उपयोग सामाजिक संदर्भ के अनुसार भाषा का उचित रूप से निमार्ण और व्याख्या करने की क्षमता शामिल है। इस विषय में **कमिंस** का कहना है किए प्रवीणता को सुननें,बोलनें,पढ़नें और लिखनें जैसे कौशलों के परिचित शब्दों में भाषा गतिविधियों के रूप में अधिक ठोस रूप में वर्णित किया जा सकता है। इस प्रकार **बचमैन** ने कहा है कि भाषा प्रवीणता किसी व्यक्ति के भाषाई संरचनाओं का ज्ञान और विभिन्न संदर्भों में प्रभावी संचार के लिये किसी विशेष भाषा का उपयोग करनें की क्षमता को प्रदर्शित करती है। प्रवीण व्यक्तियों को आमतौर पर उच्च स्तर की संवादात्मक निपुणता रखनें वाला माना जाता है। भाषा प्रवीणता का मूल्यांकन करने के लिये निम्न शब्दों का उपयोग किया जाता हैः सटीकता,प्रवाह,जटिलता,उप्युक्तता और क्षमता। इससे यह ज्ञात किया जा सकता कि भाषा प्रवीणता किसी व्यक्ति के लिये कितना महत्व रखती है या उसे इस विषय का कितना ज्ञान है।

1.3 शैक्षिक उपलब्धि– किसी देश के आर्थिक वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से प्रगति करने के लिये उस देश की शैक्षिक उपलब्धि वह मानदण्ड है जिसके द्वारा शैक्षिक परिणामों को मापा जाता है। इसीलिये यह आवश्यक है कि शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जाये। माता–पिता अपनें बच्चों की उच्च गुणवत्ता सुनिश्चित करनें के लिये अपनें बच्चों को स्कूल में दाखिला दिलाते हैं। शैक्षिक उपलब्धि स्कूलों में सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। शैक्षिक उपलब्धि नें हाल ही में बहुत ध्यान आकर्षित किया है। युवाओं के समाज में अच्छी तरह से फलन फूलन के लिये आज के परिवेश में शैक्षिक प्रदर्शन महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह उपलब्धि छात्रों को कठिन प्रयास करने के लिये प्रेरित करती है और उनकी स्थिति के विषय में अंतरदृष्टि प्रदान करती है। इसके साथ ही यह स्कूल स्तर पर प्रगति करने डिग्री हासिल करने और रोजगार के अवसर हासिल करने का आधार है। शैक्षिक और करियर की संभावनाओं को प्रभावित करने के अलावा शैक्षिक उपलब्धि व्यक्तिगत संतुष्टि और सामाजिक मान्यता को भी प्रभावित करती है। शैक्षिक उपलब्धि किसी व्यक्ति की सामाजिक क्षमताओं और योग्यतओं,प्रयास और उपलब्धि से प्राप्त ज्ञान के मूल्यांकन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने वाले अक्सर नवाचार,अनुसंधान और नेतृत्वकारी भूमिकाओं के माध्यम से समाज में अपना योगदान देते है जिससे सामाजिक प्रगति को बल मिलता है और समाज में उनका स्थान उच्च होता है।

1.4 धारणाएँ– धारणा एक ऐसी स्थिति या तथ्य है जिसे शोधकर्ता अपने अध्ययन के लिये सत्य मानते है। एक धारणा एक प्रारंभिक बिन्दु या वह आधार है जिसे तर्क या कारण के लिये स्वीकार किया जाता है। शोध में एक धारणा एक विश्वास या स्थित है जिसे शोधकर्ता बिना परीक्षण किये सत्य मान लेता है क्योंकी

यह या तो स्पष्ट है या व्यापक रूप से स्वीकृत है या अध्ययन को आगे बढ़ाने के लिये आवश्यक है। धारणायें शोध की सीमाओं को परिभाषित करने में मदद करती है। अनुसंधान में धारणाओं के उदाहरण निम्न हैः–

- सर्वेक्षण अनुसंधान
- प्रयोगिक अनुसंधान
- गुणात्मक अनुसंधान
- शैक्षिक अनुसंधान

आदि। इस अध्ययन में बोधात्मक पठन एंव भाषा प्रवीणता का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है, इस सम्बंध में विद्यार्थीयों की धारणाओं को जानने का प्रयास किया गया है। इसके अन्तर्गत शिक्षकों एंव अभिभावकों से भी इसके प्रति उनकी धारणाएँ जानने का प्रयास किया गया है।

1.5 गुणात्मक अध्ययन – गुणात्मक शोध एक प्रकार का वह शोध है जो संख्याओं या सांख्यकीय आकड़ों के बजाये लोगों के अनुभवों,भावनाओं,विचारों और सामाजिक संदर्भों को गहराई से समझने पर केन्द्रित होता है। यह केवल कितने या कितनी बार के बजाय क्यों और कैसे कुछ घटित होता है इस पर ध्यान केन्द्रित करता है यह किसी परिकल्पना का परीक्षण करने के बजाय किसी घटना का अन्वेषण और समझने का प्रयास करता है। गैर.संख्यात्मक डेटा संख्याओं के बजाय शब्दों,विवरणों और अवलोकनों का उपयोग करता है। संदर्भ आधारित व्यवहार को प्रभावित करनें वाले पर्यावरण,संस्कृति और सामाजिक कारकों पर विचार करता है। शोधकर्ता प्रतिभागियों के दृष्टिकोण से अर्थ की व्याख्या करता है।

2. अध्ययन के उद्देश्यः

1. विद्यार्थीयों के बोधात्मक पठन एंव भाषा प्रवीणता के मध्य सम्बंध का अध्ययन करना

2. किस प्रकार भाषा प्रवीणता विद्यार्थीयों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है का अध्ययन करना

3. बोधात्मक पठन एंव भाषा प्रवीणता से सम्बन्धित विद्यार्थीयों के दृष्टिकोणों,अनुभवों एंव चुनौतियों का अध्ययन करना

4. बोधात्मक पठन एंव भाषा प्रवीणता में सुधार के लिये शिक्षकों और अभिभावकों के विचारों का अध्ययन करना

3. शोध पद्धतिः

नमूना

इस अध्ययन के अन्तर्गत उद्वेश्यपूर्ण नमूना चयनविधि का प्रयोग करते हुये कक्ष–.6 से कक्षा–10 तक के 30 विद्यार्थीयों एंव इसके साथ 10 शिक्षकों तथा 10 अभिभावकों का चयन किया गया जो कानपुर नगर के निवासी हैं।

जैसा कि इस अध्ययन के प्रारम्भ में ही बताया गया है कि यह एक गुणात्मक अध्ययन है। इस अध्ययन में प्रदत संकलन के लिये निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया गया है .

साक्षात्कार

प्रतिभागी समूह

विद्यार्थीः कक्षा 6–10 तक के

शिक्षक

अभिभावक

इसके अन्तर्गत प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थीयों से पठन से सम्बन्धित प्रश्न पूछे गये एंव उनसे यह भी जानकारी ली गयी की किस प्रकार भाषा की समझ उनके अन्य विषयों की प्रगति को प्रभावित करती है। इसके साथ ही शिक्षकों से भी बोधात्नक पठन एंव भाषा प्रवीणता से सम्बन्धित कुछ प्रश्न किये गये जिसमे यह जानने का प्रयास किया गया कि यह दोनो किस प्रकार विद्यार्थीयों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है एंव आप विद्यार्थीयों के बोधात्मक पठन को सुधारने के लिये कौन–कौन सी शिक्षण पद्धतियाँ अपनाते है आदि अन्य कई प्रकार के प्रश्न पूछे गये जो विद्यार्थीयों की भाषा प्रवीणता सुधारने एंव प्रगति का मूल्यांकन करने से सम्बन्धित थे। इसके साथ ही अभिभावकों से भी कुछ प्रश्न किये जैसे कि आप अपने बच्चे को किस तरह पढ़ने में मदद करते है एंव आपके विचार में भाषा प्रवीणता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच क्या सम्बंध है आदि। कुछ अन्य प्रश्न उनसे स्कूल की रणनीतियों के विषय में भी किये गये। जिससे यह समझा जा सके कि अभिभावक स्कूल में अपनाई जाने वाली रणनीतियों से कितना सहमत है।

फोकस समूह चर्चा

प्रतिभागी समूह

विद्यार्थी (6 से 8 सदस्य)

शिक्षक (6 से 8 सदस्य)

इसके अन्तर्गत विद्यार्थीयों से यह जानने का प्रयास किया गया कि पढ़नें में कौन–कौन से हिस्से आपको को कठिन लगते है,शिक्षक की कौन सी शिक्षण विधियाँ आपको सबसे अधिक प्रभावी लगती है एंव आप किस प्रकार की गतिविधियाँ पढ़नें के लिये उपयोगी मानते है। इसके साथ ही शिक्षकों से भी इस विषय पर चर्चा की गयी कि विद्यार्थीयों की भाषा प्रवीणता को बढ़ाने की सबसे सफल रणनीतियाँ कौन सी है,क्या भाषा दक्षता का प्रभाव अन्य विषयों पर पड़ता है एंव क्या आप को बोधात्मक पठन एंव भाषा प्रवीणता को सुधारने के लिये अतिरिक्त संसाधनों या प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस होती है।

डेटा विश्लेषण– इस अध्ययन के अन्तर्गत जो डेटा साक्षात्कार एंव फोकस समूह के माध्यम से एकत्रित किया गया है उसका विश्लेषण विषयगत विश्लेषण के माध्यम से किया गया है। इसके लिये सबसे पहले जो डेटां प्राप्त हुआ उसका दो से तीन बार अध्ययन किया गया और फिर उससे जो विचार,भावनायें और अनुभव सामान्य थे उन्हें चिन्हित किया गया एंव मुख्य विषय और उप विषय के रूप मे तैयार किया गया । इनके माध्यम से विषयों के आधार पर प्रतिभागियों की सोच,अनुभव और व्यवहार के पैर्टन को समझा गया एंव अध्ययन के उद्वेश्यों से सम्बन्धित गहन निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

4. परिणामः– इस अध्ययन से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये जो इस प्रकार है .

- भाषा प्रवीणता का सीधा सम्बंध बोधात्मक पठन से है। जिन विद्यार्थीयों की भाषा पकड़ अच्छी थी उनका पाठ को समझने का स्तर भी उच्च था।

- बोधात्मक पठन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव देखा गया क्योकी उच्च बोधात्मक पठन वाले विद्यार्थीयों में विषय को गहराई से समझने की क्षमता दिखाई दी जिससे उनका शैक्षिक प्रदर्शन बेहतर दिखा।
- विद्यार्थीयों ने यह कहा कि भाषा उनके सोचने,समझने और सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। भाषा की प्रवीणता से वे विषय वस्तु को अच्छी तरह से समझ पाते है।
- विद्यार्थीयों का यह भी मानना था कि बोधात्मक पठन एंव भाषा प्रवीणता को बढ़ाने में शिक्षकों द्वारा अपनाई गई रणनीतियाँ एंव संसाधनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।
- जिन विद्यार्थीयों का बोध स्तर उच्च नही था एंव भाषा के प्रवाह में भी कठिनाई महसूस हो रही थी, वह भाषा का उचित प्रयोग नही कर पा रहे थे जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक प्रगति पर भी देखा गया।

5. निष्कर्षः – प्रस्तुत अध्ययन से यह पता चलता है कि बोधात्मक पठन एंव भाषा प्रवीणता का विद्यार्थीयों की शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा प्रभाव पड़ता है। भाषा सिर्फ बात चीत करने या विचार व्यक्त करने का माध्यम नही है बल्कि यह सोचने,समझने एंव सीखने की प्रक्रिया का मूल आधार है। जिन विद्यार्थीयों में भाषा की एक अच्छी समझ होती है, वे पाठ को बेहतर ढंग से समझने के साथ–साथ उसे अपने अनुभवों से जोड़कर गहनता से विश्लेषण भी कर सकते हैं।

इस अध्ययन से यह पता चलता है कि पठन बोध एंव भाषा प्रवीणता की अच्छी समझ रखने वाले विद्यार्थीयों को जटिल से जटिल विषय आसानी से समझ आ जाते हैए जिससे उनका शैक्षिक प्रदर्शन अच्छा रहता है और जिन विद्यार्थीयों को पठन या भाषा को समझने मे कठिनाई होती है उनका आत्मविश्वास एंव प्रदर्शन दोनो ही प्रभावित होते है।

अतः यह कहा जा सकता है कि बोधात्मक पठन एंव भाषा प्रवीणता में सुधार करके विद्यार्थीयों की समग्र शैक्षिक प्रगति को बढ़ाया जा सकता है।

6. सन्दर्भः

वायगोत्सकी,एल.एस.(1978) *समाज में मनः उच्च मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का विकास,* हार्वर्ड विश्वविद्यालय प्रेस .1

कमिंस,जे. (1979) *संज्ञानात्मक शैक्षिक भाषा प्रवीणता,भाषाई पारस्परिकता,इष्टतम आयु प्रश्न और अन्य मुद्दे* वर्किंग पेपर्स आन बाइलिंग्वलिज्म .2

जानसन,पी. (1988) *स्नातक अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की अंग्रेजी भाषा प्रवीणता एंव शैक्षिक प्रदर्शन.*टीईएसओएल त्रैमासिक, 22(1)– 164–168 .3 https://doi.org/10.2307/3587070

कमिंस,जे.(2000) *भाषा शक्ति और शिक्षाशास्त्रः द्विभाषी बच्चे,*बहुभाषी मैट गूगल लेंस .4

राष्ट्रीय पठन पैनल(2000) *बच्चों को पढ़ना सिखानाः पठन पर वैज्ञानिक शोध साहित्य का साक्ष्य आधारित मूल्यांकन और पठन शिक्षण पर इसके निहितार्थ* .5

एंडरसन,एल.डब्लयू .और कैथवोल डी. आर. (2001) *ब्लूम टैक्सोनामी का पुनरीक्षित संस्करण अधिगम उद्देश्य योजना और मूल्यांकन,* .6

योगुर्टचु,के.(2013) *आत्म. प्रभावकारिता की धारणा का पठन.बोध एंव शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव*। प्रोसीडिया–सोशल एंड बिहेवियरल सांइसेज, 70,375–386 .7

https://doi.org/10.1016/jsbspro.2013.01.075

हिज्जी,डी.(2018) *विद्यार्थीयों की बोधात्मक पठन क्षमता एंव अंग्रेजी में उनकी उपलब्धि के मध्य सम्बंध*। यूएस–चाइना. विदेशी भाषा, 16(3), 114–125 .8

https://doi.org/10.17265/1539-808/2018.03.002

फिलिप्स गैलोव,ई.,उकेली, पी.(2019) *बोधात्मक पठन से परेः प्रारम्भिक किशोर के लिखित सारांशों में मुख्य शैक्षिक भाषा के अतिरिक्त योगदान की खोज*। रीड राइट 32,729–759 .9

https://doi.org/10.1007/s11145-018-9880-3

गालाजिया, टी.जे.एल.(2020) *विद्यार्थीयों की बोधात्मक पठन, समस्या समाधान कौशल और शैक्षिक प्रदर्शन.* जर्नल आफ वल्ड इंग्लिशेज एंड एजुकेशनल प्रैक्टिसेज, 2(4), 1–15 .10

https://www.jeeps.org

लारेंस,जे.एफ.,क्राफ,ऐ.आर.,मैकलार्थ,ए.,कुलैज,पी.ए.,फ्रांसिस,डी.जे.,(2021) *बोधात्मक पठन एंव शैक्षिक शब्दावलीः आइटम विशेषताओं और पठन प्रवीणता के सम्बंधों की खोज.* पठन शोध त्रैमासिकए 57(2),669–69 .11 https://doi.org/10.1002/rrq.434

पीटस,के.एफ.,यिम,ओ. और बायलिस्टोक,ई.(2022) *द्विभाषी बच्चों मे भाषा प्रवीणता, बोधात्मक पठन एंव गृह साक्षरताः संदर्भ का प्रभाव।* इंटरनैसट जर्नल आफ बाइलिंगुअल एजुकेशन एंड बाइलिंगुअलिज्म, 25(1),22 .12

https://doi.org/10.1080;13670050.2019.1677551

आर्टेगा.डेला क्रूज,आर.,एंव लोपेज,एम.के.आर.आर.(2022) *जूनियर हाई स्कूल के छात्रों का बोधात्मक पठन एंव मौखिक अंग्रेजी भाषा प्रवीणता बढ़ाने में गैलरी वाक तकनीक।* वाइकाटो जर्नल आफ एजुकेशन, 27(3),57–71 .13 https://doi.org/10.15663/wje.v27i3.813

इजतुल्लाह,स.नासिर,र.,एंव गुल,फ.(2022) *उच्च शिक्षा संस्थानों के विद्यार्थीयों की अंग्रेजी भाषा प्रवीणता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बंध का अध्ययन।* ग्लोबल एजुकेशनल स्टडीज रिव्यू,7(1),149–158 .14 https://doi.org/10.31703/gesr.2022(7-1)

अल्कुराशी,एन.(2024) *ईएफएल विद्यार्थीयों में भाषा प्रवीणता एंव पठन चिंता का पठन बोध पर प्रभावः प्रमुख योगदान कारकों और निहितार्थों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।* जनर्ल आफ लैंग्वेज एंड लिंग्विस्टिक स्टडीज,20(2) . 15 https://jlls.org